समकालीन हिंदी कविता और लीलाधर जगूड़ी के काव्य में युगबोध

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ से हिंदी साहित्य विषय में
पीएच०डी० की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-संक्षिप्तिका

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध निर्देशक
डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग

शोध छात्रा
कु० श्वेता मिश्रा
नामांकन संख्या: 626/18
हिंदी विभाग

हिंदी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025(उ०प्र०)

2022

शोध–संक्षिप्तिका

जीवन के मूल्य जब व्यापक समाज द्वारा स्वीकार कर लिए जाते हैं तब वे एक युग–विशेष की पूर्ण मान्यता प्राप्त कर लेते हैं। **'युग'** शब्द की विवेचना प्रमुख रूप से तीन आधारों पर की जाती है। यह आधार काल, व्यक्ति और घटना है। युगबोध दो शब्दों से मिलकर व्युत्पन्न वह शब्द युग्म है, जिसे सामान्य बोलचाल की भाषा में समसामयिक परिस्थितियों का परिज्ञान के अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। युग शब्द का कोशगत अर्थ है **'समय'** अथवा **'काल'** तथा बोध का तात्पर्य ज्ञान, जानकारी। इस दृष्टि से युगबोध से यह अभिप्राय हुआ कि किसी काल विशेष की परिस्थितियों अथवा विशेषताओं आदि का सम्यक ज्ञान। इस प्रकार हम पाते हैं कि **'बोध'** जीवन से अलग कोई ईश्वरीय देन नहीं है बल्कि संपूर्ण मानव बौद्ध के क्रमिक विकास में व्याप्त अनुभूतियों का प्रसंग है। इससे स्पष्ट है की बोध मानव मस्तिष्क का गुणधर्म है जिसके माध्यम से हम अपने चारों ओर की घटनाओं, परिस्थितियों एवं वातावरण का बोध करते हैं।

युगबोध में **'बोध'** शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं। युगबोध एक ऐसा विषय है जो प्रत्येक रचनाकार से संदर्भ विशेष बनकर साथ ही साथ बढ़ता है। युगबोध का प्रभाव कवि के अनुभव वैचित्य से जुड़ा होता है। वास्तव में युगबोध समाज सापेक्ष होता है। यह समाज में दर्पण का कार्य करता है। किसी कवि को अपने युग का कितना ज्ञान है। यह पूर्णतः उसकी समकालीन दौर में लिखी रचनाओं में मिलता है। उसकी रचना उन परिस्थितियों का झाँकता बिंब प्रस्तुत करता है। एक सचेत कवि अपने समय में क्या घट रहा है? क्यों और कैसे? सवालों से मुठभेड़ करता है। वह पाठकों के समक्ष वह सब कुछ पूर्णतः स्पष्ट करता है जैसी घटना घटी है या होने की आशंका है।

सन् 70 के दशक के समकालीन हिंदी कविता में लीलाधर जगूड़ी एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में प्रसिद्ध हैं। पद्मश्री, साहित्य अकादमी, रघुवीर सहाय सम्मान आदि पुरस्कारों से सम्मानित जगूड़ी जी अपने समय के विसंगतियों का यथार्थ अंकन करने वाले उन कवियों में आते हैं जो युगद्रष्टा के साथ–साथ भविष्य द्रष्टा भी हैं। जगूड़ी का जीवन और साहित्य वैविध्यपूर्ण एवं विशिष्ट है। उन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी प्रतिभा से समृद्ध हीं नहीं किया अपितु कथ्य और शिल्प के धरातल पर नवीनता भी प्रदान की है।

समकालीन हिंदी कविता में अपना विशेष योगदान देने वाले कवि जगूड़ी ने बड़ी ही निष्ठा के साथ साहित्य के प्रति झुके हैं। संघर्ष का दौर बेहद ही असंवेदनशील एवं यंत्रवत होता है जिसके चपेट में आने के बाद मनुष्य मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक आधार पर कमजोर और नीरस हो जाता है। लेकिन जगूड़ी उसे अपनी ताकत बनाते हैं।

अनुभव के जटिल पठारों पर यात्रा करने वाले कवि '**लीलाधर जगूड़ी**' ने अब तक कुल 13 काव्य–संग्रहों की रचना की है। उनके कुल 13 काव्य–संग्रह इस प्रकार है– **(1) शंखमुखी शिखरों पर (1964) (2) नाटक जारी है। (1970) (3) इस यात्रा में (1973), (4) रात अब भी मौजूद है (1975), (5) बची हुई पृथ्वी (1980), (6) घबराये हुये शब्द (1981), (7) भय भी शक्ति देता है (1991), (8) अनुभव के आकाश में चाँद (1994), (9) महाकाव्य के बिना (1975), (10) ईश्वर की अध्यक्षता में (1999), (11) खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है (2001), (12) जीतने लोग उतने प्रेम (2017) और (13) कविता का अमर फल (2020)** आदि प्रमुख हैं।

उक्त सभी संग्रहों में जगूड़ी के युग और सामाजिक यथार्थ का वर्णन मिलता है। दलित, पीड़ित, दरिद्रता, आतंक, आक्रोश, भय, विद्रोह, विडंबना, सतत लोलुपता, सांप्रदायिकता, विसंगति बोध आदि को लेकर उन्होंने सृजन कार्य किया है।

जगूड़ी जी मूलतः राजनीतिक–सामाजिक कवि हैं। अतः उनके काव्य संग्रहों की कविता में उसकी छाप मिलती है। जगूड़ी जी व्यवस्था के प्रति शुरू से ही कठोर रहे हैं। उनका प्रथम काव्य संग्रह **'शंखमुखी शिखरों पर'(1964)** अपने प्रकाशन के साथ ही लोकप्रिय कृति के रूप में विख्यात हो गया। चूंकि यह कवि का प्रथम संग्रह है इसलिए इसमें कवि की प्रकृति संबंधी कविता एवं कुछ व्यक्तिगत कविताओं का भी संकलन मिलता है।

'नाटक जारी है' कृति जगूड़ी का एक बहुचर्चित संकलन है। **'नाटक जारी है'** (1970) कृति जगूड़ी का दूसरा संग्रह है। रचनाओं के आकार की दृष्टि से इस कृति में वैषाम्य है। कुछ रचनायें केवल आधे पृष्ठ की हैं तो कुछ तीन पंक्ति की ही मात्र हैं। इस कृति की शीर्षक रचना **'नाटक जारी है'** का विस्तार 43 पृष्ठों का है। वह लगभग 900 पंक्तियों की 37 बंदों की रचना है। इस रचना में 1967 से 1970 की कालावधि का सटीक प्रत्यक्ष चित्रण मिलता है। यह संग्रह उनके राजनीतिक जीवन का सच है। 37 बंदों की रचना एक रचना ही **'नाटक जारी है'** जो कालखंड की परिस्थितियों का विशेष परिचायक है।

'इस यात्रा में' कवि लीलाधर जगूड़ी का 1973 ई0 में प्रकाशित तीसरा प्रमुख काव्य–संग्रह है। इस संकलन में कुल 34 कवितायें हैं। इस संग्रह में एक विशेषता है कि इसमें कथ्य के अनावश्यक विस्तार से बचा गया है। कवि की अभिव्यक्ति में वक्तव्य के विस्तार की अपेक्षा कवित्व की शक्ति पूर्व–संग्रहों की अपेक्षा अधिक प्रतीत होती है।

'रात अब भी मौजूद है' सदियों से रात को अमानुषिक अत्याचारों, बर्बर कृत्यों तथा कुव्यवस्थाधर्मी अध्यादेशों की प्रतीक के रूप में जाना जाता है। समाज के अंधकार को दर्शाने वाले इस काव्य संकलन में कवि लीलाधर जगूड़ी की 32 रचनायें संकलित हैं। जो अव्यवस्था पर केंद्रित है। भारतीय वाड्.मय में रात या अंधेरा प्राचीनकाल से ही तमस, अज्ञान, अवनति या आसुरी प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। इस आलोक में इसके विपरीत प्रथम दृष्टि में ही कवि इस संग्रह

के शीर्षक के माध्यम से नकारात्मक या निराशावादी दृष्टिकोण का वर्णन करता है।

'बची हुई पृथ्वी' कवि का 1977 में प्रकाशित संकलन है। इस कृति की रचनाओं में हारें हुए योद्धा, संघर्षशील व्यक्ति को कहीं से आशा की किरण प्रस्फुटित होती दिखाई देती है। संग्रह के शीर्षक से ही प्रतीत होता है कि नैराश्य के इस वातावरण में भी पृथ्वी अर्थात् जीवन अस्मिता अपना अस्तित्व बचाये हुए है।

'घबराए हुए शब्द' काव्य–संग्रह में कवि की 1976 से 1980 तक की कालावधि में लिखी गई रचनाओं का संग्रह है। 37 कविताओं वाले इस संकलन का प्रथम प्रकाशन सन् 1981 में हुआ था। श्री जगूड़ी जी की ये रचनायें यथार्थवादी रचनायें हैं। पाठक यदि इन पर एक बार दृष्टिपात करे तो इनकी आकर्षण चेतना इतनी अधिक है कि ये पाठक में तथा पाठक इनमें गहनतम उतरता चला जाता है।

'भय भी शक्ति देता है' जगूड़ी की काव्य यात्रा का सातवाँ सोपान है। इसका प्रथम प्रकाशन 1991 में किया गया था। **'घबराए हुए शब्द'** संग्रह का प्रकाशन और इस कृति के प्रकाशन का समयान्तराल 10 वर्ष का है। इस लंबे अंतराल में कवि ने पिछले काव्य अनुभवों के आधार पर नितांत नवीन संवेदनाओं के धरातल का अवतरण किया है।

'अनुभव के आकाश में चाँद' काव्य संकलन का प्रकाशन 1994 में हुआ था। सातवें दशक में जगूड़ी की काव्य–यात्रा विभिन्न दौर से गुजरती है। फिर यह संकलन महत्वपूर्ण लक्ष्य तक पहुँचती है। पूर्व संकलनों में कवि की पहचान यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर अपने काल–क्षेत्र–परिवेश पर तीक्ष्ण दृष्टि रखने वाले कवि की रही है। इस संकलन में वे अपने पूर्व अनुभवों को और अधिक विस्तृत बहुप्रस्तीर्णा फलक प्रदान करते हैं। यही कारण है कि इस कृति को साहित्य अकादमी पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। 1995 में प्रकाशित यह

काव्य–संग्रह कवि की 13 लम्बी रचनाओं का संकलन है। कवि विषयों की व्यापकता के कारण काव्य तथा रचनाकार के अनुभवों को छाटी रचनाओं में विस्तार से नहीं रख पाता। इसलिए लम्बी रचनाओं का उद्‌गम होता है।

'ईश्वर की अध्यक्षता में' काव्य संग्रह का प्रकाशन 1999 ई० में हुआ। यह **'अनुभव के आकाश में चाँद'** संग्रह का अगला पड़ाव है। इसमें जीवन के विविध आयाम, बहुदिशि होकर प्रस्तरित होने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं। कवि के चिंतन फलक को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि कवि अपने पहली कृति से विस्तार पाता हुआ दसवीं कृति तक बहुधर्मा, बहुवर्णा हो गया है।

'खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है', जगूड़ी जी यह ग्यारहवां संग्रह समकालीन परिदृश्य से बहुत महत्वपूर्ण संग्रह है। इसका प्रकशन 2008 में हुआ। इस संग्रह में सामाजिक यथार्थ पर विशेष बल मिलता है । कुल 108 पृष्ठों में संकलित इस संग्रह में कूल 67 रचनाएँ संकलित हैं। अधिकांश रचनाएँ लंबी हैं । कुछ कविता 10 पंक्तियों में भी लिखी गयी है। जगूड़ी जी प्रयोगधर्मी कवि हैं। राजनीति के क्रिया–प्रक्रियाँ पर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि रखने के कारण उसके सभी भ्रष्ट कार्यों पर उनकी लेखनी दृढ़ता के साथ चलती हैं। उक्त शीर्षक से ही संग्रह के उद्देश्य स्पष्ट हो रहे हैं । जगूड़ी जी के कविता का अपना अलग मिजाज है। उनकी कविता का जो व्यापक विस्तार है वह उनके अनुभवों के आधार पर है। ऐसा अनुभव स्व–पीड़ा के कारण ही विकसित होकर दृढ़ होती है।

'जीतने लोग उतने प्रेम' जगूड़ी जी का नवीन 12 वाँ काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन वर्ष 2017 में हुआ है। इस कृति पर जगूड़ी जी को 28 वाँ व्यास सम्मान प्रदान किया गया है। 176 पृष्ठों में कुल 67 रचनाएं इस संग्रह में हैं। इस संग्रह में कवि प्रेम के स्वरूप पर बात करता है। जैसे कोई साहित्यिक कृति कभी अप्रासंगिक नहीं होती है। उसी तरह प्रेम का स्वरूप या प्रेम का विषय कभी भी अप्रासंगिक नहीं होगा। पीढ़ियाँ आएँगी चली जाएँगी लेकिन प्रेम शाश्वत है

और सदैव स्थिर रहेगा। संसार में भिन्न–भिन्न तरह के लोग हैं। उनकी विचारधारा भी एक दूसरें से सदैव अलग या मिली जुली होती है। जिस तरह जीवन शैली और कार्य प्रणाली, सुख– दुख एक दूसरें से भिन्न होता है। ठीक उसी प्रकार प्रेम करने के उनके तरीके भी एक दूसरें से भिन्न हैं।

कविता का अमर फल, यह लीलाधर जगूड़ी का नया काव्य–संग्रह है। यह संग्रह आधुनिक लोक–गाथाओ पर आधारित है। लीलाधर जगूड़ी का मानना है कि कविता ने जैसे पहले अपने लिए गद्य को पद्य का रूप दिया उसी तरह आधुनिक समय में कविता को एक नए गद्य की जरूरत है जो पद्य की सरसता को एक नया रूप दे सके। भर्तृहरि इन कविताओं की प्रेरणा के मूल में हैं। उस महान कवि ने कविता को कैसे सम्भव किया। बहुत प्रकार के बादल रहते हैं आसमान में, कुछ तो सृष्टि को भिगो देते हैं और कुछ बेकार ही गरजकर चले जाते हैं। इसी तरह काव्यानुभव भी सब एक तरह के नहीं होते। कुछ तो अपना शिल्प और गल्प भी लेकर आते हैं।

कवि जगूड़ी ने क्रांति की समस्त प्रक्रियाओं को जन आंदोलन का रूप दिया है। उनका मानना है कि आक्रोश और विरोध की गतिविधियाँ बेमतलब नहीं है उसके मूल में आर्थिक विषमता है। कवि जगूड़ी सृजनशील चेतना के साहित्यकार रहे हैं। उनकी कविता उस इंसान का बयान है जो बंदूकों के गोदाम से अनाज की ख्वाहिश रखता है या उस आँख की दरख्वास्त करता है जिनमें ऑसू हैं।

तीसरा तारसप्तक का प्रकाशन सन् 1959 ई० में हुआ। नयी कविता का व्यक्तिवाद और आधुनिकतावाद आमतौर पर इस अवधि तक प्रबल रूप में विकसित हो रहा था। यद्यपि बदलाव ला रहे कवियों ने पुरानी काव्यधारा स्वयं को अलग करते आ रहें थे, लेकिन फिर भी कहीं न कहीं वह पूर्व की काव्यधारा ही विकसित कर रहे थे। इसी विकास को कुछ विद्वान समकालीन और साठोत्तरी कविता के नाम से अभिहित करते हैं। यही साठोत्तरी कविता का उत्तरकालीन

रूप कालांतर में विविध वादों और आंदोलनों के समुहों से गुजरते हुये 1975–1976 के आस–पास **'समकालीन हिंदी कविता'** के नाम से विख्यात हुआ। विभिन्न विपरीत परिस्थितियों में विविध प्रकार की जटिल स्थिति उत्पन्न होती है। जिससे कोई आंदोलन स्वतः जन्म लेता है और कुछ परिस्थितियों के कारण जन्म लेते हैं। कुछ आंदोलनों की छाप गहरी नहीं होने के कारण शीघ्र ही विलुप्त हो जाती है। सातवें दशक तक समकालीन कविता में विविध वादों आंदोलनों का विकास हुआ। वह है अकविता आंदोलन, विचार आंदोलन, सनातनी सूर्योदयी कविता, युयुत्सावादी कविता, नूतन कविता, सहज कविता आदि आंदोलन मुख्य है। इस दौर से प्रभावित होकर एक ही समय के आस–पास विभिन्न आंदोलनों ने अपनी–अपनी प्रवृत्ति के साथ जन्म लिया। कुछ आंदोलनों अपने प्रवृत्ति के आधार पर बहुत दूर चले गये। और समकालीन हिन्दी कविता में अपना स्थान निश्चित कर लिया। जैसे अ–कविता, जनवादी कविता, नवगीत, ताजी कविता आदि प्रमुख रूप से प्रसिद्ध हुयें।

' **लीलाधर जगूड़ी**' समकालीनों के बीच अलग महत्व की अधिकारी बनकर सामाजिक चेतना को प्रस्तुत कर युवा रचनाशील पीढ़ी को आकृष्ट करती है। मुझे भी जगूड़ी की इन विशेषताओं ने प्रभावित और आकृष्ट किया। इसी लगन से मैंने **"समकालीन हिंदी कविता और लीलाधर जगूड़ी के काव्य में युगबोध'** अनुसंधान का विषय चुना है।

प्रथम अध्याय **'समकालीन हिंदी कविता की अवधारणा'** के विषय में लिखा है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत समकालीन हिंदी कविता की वैचारिक पृष्ठिभूमि, उसके मूल्य, उसकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुये सन् 1959 से सन् 2010 के कवियों की कविता का भी परिचय दिया है। समकालीन हिंदी कविता 1960 के बाद के आंदोलनों में एक प्रमुख आंदोलन हैं। जिसकी शुरुआत 1975 के आपातकाल से माना गया है। यह '**नयी कविता**' के बाद विभिन्न काव्य–आंदोलनोंमें महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि साहित्य की प्रत्येक विधा में इसका प्रयोग हो रहा है। समकालीन हिंदी

कविता को एक आंदोलन के रूप में लाने तथा कविता की सही सार्थक पहचान करवाने में लीलाधर जगूड़ी का नाम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

द्वितीय अध्याय में **'समकालीन हिंदी कविता के विविध आयाम'** को प्रस्तुत किया है। इनमें कुल 11 आयामों पर चर्चा की गयी है जिसमें **अकविता, जनवादी कविता, अस्वीकृत कविता, सहज कविता, प्रतिबद्ध कविता, विचार कविता, बीट कविता, वाम कविता, सनातनी सूर्योदयी कविता, लंबी कविता,युयुत्सावादी कविता** आदि हैं। कालखंड में परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होती है। इस अध्याय में विविध आयामों की पृथक–पृथक विस्तृत चर्चा की गयी है। जिनमें मुख्य रूप से सभी आंदोलनों की शुरुआत, उसके प्रवर्तक और परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

तृतीय अध्याय में **'लीलाधर जगूड़ी का जीवनवृत्त एवं रचना संसार'** के विषय में लिखा गया है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत लीलाधर जगूड़ी का जन्म, बचपन, माता,–पिता, भाई–बहन, शिक्षा–दीक्षा, मित्र, परिवार, विवाह, नौकरी, कार्यक्षेत्र, साहित्य–सृजन की प्रेरणा की जानकारी दी गयी है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं के अंतर्गत कवि के रूप में साहित्य का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, और उसका विश्लेषण भी किया गया है। जिसमें आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।उनके साहित्य में भारत देश का परिवेश, ग्रामीण जीवन विशेष कर मध्य वर्ग, मजदूर, नारी, गरीबी, भ्रष्टाचार और आज की सामाजिक विसंगतियों और विषमताओं से युक्त समाज को बहुत ही सफलता से अभिव्यक्ति किया गया है।

इस अध्याय में इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि लीलाधर जगूड़ी के जीवन और व्यक्तित्व पर पारिवारिक जीवन के परिवेश का एवं समाज जीवन के परिवेश का किस प्रकार प्रभाव पड़ा है और यह प्रभाव साहित्य में कहाँ और किस प्रकार अभिव्यक्ति हुआ है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष भी दिये गये हैं।

चतुर्थ अध्याय में '**लीलाधर जगूड़ी की काव्य–दृष्टि**' को विवेचित किया गया है। इस अध्याय में युगबोध की अवधारणा एवं परिभाषा पर चर्चा करते हुये लीलाधर जगूड़ी के काव्य में युगबोध का विवेचन किया गया है। जिसमें उनके कुल चार प्रकार के युगबोध पर विस्तृत चर्चा की गयी है सामाजिक बोध, राजनीतिक बोध, वैयक्तिक बोध, और नारी बोध आदि हैं।

प्रत्येक कवि अपने युग और युग के विसंगतियों पर पैनी दृष्टि रखता है। वह उन्हीं घटनाओं को सृजित करता है जो सीधे–सीधे आम–जन के पीड़ा से संवेदित होती है। लीलाधर जगूड़ी समकालीन प्रवृत्ति को आत्मसात किए थे। उन्होने अपने समय और समाज के जरूरी मुद्दों पर आवाज उठायी है। साहित्य के माध्यम से अपनी लेखनी में उसको जगह दी है। राजनीतिक परिदृश्यों को आधार बनकर उन्होने स्वतंत्र काव्य–संग्रह भी लिखा है, जिसमें प्रसिद्ध **'नाटक जारी है', खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है' बची हुई पृथ्वी,'इस यात्रा में**' आदि में उनके राजनीतिक मुखरता का रेखांकन हुआ है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

पाँचवाँ अध्याय **'लीलाधर जगूड़ी की कविता में भाषा की समकालीनता'**है। जिसमें मैंने उनकी भाषा की और शिल्प पक्ष चर्चा की है। कोई भी रचनाकार अपनी रचना करते समय अपने भावों के प्रस्तुतिकरण के लिए शब्दों को माध्यम बनाता है।

भाषा के माध्यम से कवि के काव्य व व्यक्तित्व दोनों की अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति से तथ्यों और भावनाओं को जाना समझा जा सकता है। जिस आधुनिक हिंदी कविता का युग मुक्तिबोध से शुरू होता है, जगूड़ी कविता में उस आधुनिक के संवाहक बने रहे – यानि उनकी कविता की भाषा समकालीन कविता के भाषा के शिखर के अनुरूप है। इस अध्याय में समकालीन कविता की भाषा की जो टैंपलेट निश्चित की गयी है, जगूड़ी जी उस साँचे में बिल्कुल फिट

आते हैं, इस अध्याय में उनके कविता में निहित छंद, अलंकार, भाषा, मुहावरे, लोकोक्ति आदि पर अध्ययन किया गया है और अंत में निष्कर्ष दिये गये हैं।

इस शोध–प्रबंध में कुल पाँच अध्याय के उपरांत अंत में उपसंहार और लीलाधर जगूड़ी के द्वारा दिये गए साक्षात्कार हैं। जिससे मेरे शोध–प्रबंध को पूर्णता मिलती है। जगूड़ी की रचनाधर्मिता सीधे समय–सापेक्ष है जो उन्हें समकालीनता के संदर्भ में विशिष्ट बनाती है। उनके काव्य में व्याप्त युगबोध पूर्णतः स्पष्ट होता है।

जगूड़ी के वर्तमान समय में प्रकाशित कुल 13 संग्रहों में यथार्थ परक युग का बोध होता है। अपनी कला साधना के प्रति जगूड़ी जी विशेष सजग हैं। वह सामाजिक एवं राजनैतिक यथार्थ के प्रति विशेष रूप से जागरूक हैं। वह समाज को वैज्ञानिक तरीके से समझने के पक्षधर हैं। जगूड़ी ने समकालीन हिंदी कविता के समकालीन शब्द को अपने लेखन में अनेक बार स्पष्ट किया है। वे समकालीन विसंगतियों को युग से जोड़ते हुये उसे सर्वकालिक स्वरूप प्रदान करते हैं। जगूड़ी का मानना है कि समकालीन शब्द का सामान्य अर्थ ग्रहण नहीं कर विशेष अर्थ ग्रहण करना चाहिए। उनके अनुसार समकलीनता एक समय में रचना करने वाले कवियों की रचना से संबंधित कविता नहीं है, अपितु उस कविता से है, जिसकी प्रासंगिकता प्रत्येक काल में है अर्थात जिसका महत्व कल भी था, आज भी है और आगे भी रहेगा।

यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि समकालीन कविता में जगूड़ी ने अपने क्षमता और सामर्थ्य से उस मुकाम को हासिल किया है जिसके वे हकदार हैं। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जगूड़ी साधक कवि हैं। उन्होंने बड़े सरोकारों से अपनी कविता को यथार्थ से जोड़ा है। उनका जीवन–जनपद से प्रदेश तक, प्रदेश से संपूर्ण देश तक और देश से विश्व तक व्यापक है। उनके काव्य गुरु त्रिलोचन के शब्दों में कि "केवल भारत नहीं विश्व का मानव जागे, जगूड़ी के काव्य का यही आशय है। वे अपने देश के कोटि–कोटि शोषित जनों

की बुलंद आवाज हैं। उनके लिए संघर्ष करने वाले कलम के सिपाही हैं। उनकी भाषा देखना और बोलना क्रियापदों से युक्त है। वे जनशक्ति को संबोधित करते हैं।

****